रिकॉर्ड :– तू प्यार का सागर है..... ओम् शांति। पहले वो ज्ञान का सागर है, पीछे प्यार का सागर है। आज बच्चों को समझाते हैं। किन बच्चों को समझाते हैं? जो विषय सागर में गोता खाते रहते हैं। विषय सागर को वास्तव में कलियुगी काली देह भी कहते हैं। भागवत में ये बातें हैं। भागवत भी इस प्रेजेंट समय का ही शास्त्र है। काली देह में तक्षक सर्प, सर्पणियाँ रहते थे। सर्प–सर्पणियों का तो ज़रूर बड़ा गाँव होगा ना। सन्यासी लोग भी सर्प–सर्पणी कहते हैं। स्त्री को सर्पणी, तो खुद को सर्प समझते होंगे। सर्प–सर्पणियाँ काली देह में रहते हैं। एक की बात नहीं, ये है बेहद की बात। ये है विषय सागर, जिससे पार होना है। विषय सागर को ही पतित सागर कहेंगे। अपन अब हैं संगम पर। कलियुगी काली देह से किनारे आ गए हैं। हम अब न कलियुग में हैं, न सतयुग में हैं। हम हैं संगमयुग पर। काली देह का किनारा अब छोड़ा है। हम जा रहे हैं। इतना ज़रूर है, कोई–2 की दिल है काली देह से और बहुतों की दिल उठ गई है। वो सदैव अपने स्वर्ग को ही याद करते हैं। ज्ञान सागर को ही याद करते हैं। पहले–2 तो हमको ज्ञान सागर पास निर्वाण धाम में जाना है। कलियुग के बाद है सतयुग, विषय सागर बाद अमृत का सागर। बच्चे जानते हैं, इस दुनिया को विषय सागर कहा जाता है। विष्टा के कीड़े भी कहा जाता है। सन्यासी दृष्टांत भी देते हैं, भ्रमरी विष्टा के कीड़े को आप समान बनाती है। वास्तव में है मनुष्यों की बात। तुम ब्राह्मणियाँ बहुत कीड़ों को भूँ–2 करती हो। कोई कीड़े तो सड़ जाते हैं, कोई के पर आ जाते हैं और उड़ने लगता है। वो तो और कीड़ों को निकाल आप समान बनाने लग पड़ेंगे। अब ब्राह्मण नाम ठीक है। अमृतसर में गुरु पौत्रे, गुरु पौत्रियाँ बहुत कहते हैं। वास्तव में सतगुरु पौत्रे–पौत्रियाँ तुम हो। भारत में दादे का हक ग्राइंड चिल्ड्रेन को बहुत मिलता है। ये भी दादा की प्रॉपर्टी है। ज्ञान का सागर वो है। ये (ब्रह्मा) तो काली देह में पड़ा था। दिखाते हैं, कृष्ण काली देह में गया, सर्प ने डंसा, काला हो गया। अब बरोबर कृष्ण की आत्मा काली देह में है ना! अब निकल रही है। सिर्फ एक कृष्ण की आत्मा नहीं, सभी काली देह में हैं। हैं तो सभी देवी–देवता धर्म के। फिर बाप आए इन कीड़ों को निकालते हैं। तुम जानते हो, हम कितने सनाथ थे। गोल्डन एज में थे। अब अनाथ बन पड़े हैं। भारत सनाथ था, अब कैसे अनाथ बन पड़े है। तीन पैर पृथ्वी के नहीं मिलते। अब ये अनाथ आकर शिवबाबा पर बलि चढ़ते हैं, जो सनाथ बनाते हैं। बाकी तो सभी अनाथ हैं। भल कोई पास करोड़, पदम हो; परन्तु हैं अनाथ। नाथ कहा जाता है परमपिता प० को। उनको नहीं जानते तो अनाथ हुए ना। कहते हैं, काली देह में आकर नाग को नथन किया। अब सर्पों को अमृत पिलाय देवता बनाय रहे हैं। इस समय सारी दुनिया काली देह में पड़ी है। नाम लेते हैं कृष्ण का। ज़रूर जो ऊँच ते ऊँच होंगे उनका नाम लेंगे ना। उनका सारा कुल काली देह में होगा। तुम कृष्ण के कुल के थे ना। अब बाबा ने ज्ञान अमृत का कलश तुम माताओं को दिया है। माताएँ बैठ कुंभीपाक नर्क से निकालती हैं। काली देह अथवा कुंभीपाक नर्क, एक ही बात है। जैसे कीड़े को गंद से निकालो तो फिर भी जाए गंद में पड़ता है, वैसे यहाँ भी बहुत हैं जिनको गंद से निकालो फिर भी जाए गंद में कूदते हैं। नर्क कुण्ड बहुत याद पड़ता है। इसलिए बाबा कहते हैं, नर्क के द्वार को याद मत करो। कहा जाता है, स्त्री नर्क का द्वार है; क्योंकि वैश्याएँ आदि दुकान निकाल बैठती हैं। पुरुष नहीं बैठते। अब स्त्रियों को भी खराब करने वाले ये ही सर्प हैं। उन्हों को वैश्या बनाने वाले तो वो हैं। अपनी कामना पूरी करने लिए जाते हैं। स्त्रियों की इतनी ग्लानि क्यों है? क्योंकि वैश्यालय स्त्रियों का ही होता है। अब फिर बाप ने आए माताओं पर ही कलश रखा है।

तब बाबा कहते हैं, गणिकाओं का भी उद्धार करना है। इसमें तो ताकत चाहिए। इस समय पूरा वैश्यालय है। स्त्रियाँ नर्क का द्वार हैं। वे बाजारी बैलों को पनाह देती हैं। सारी दुनिया कुंभीपाक नर्क है। नाम ही है कलियुग। सिर्फ भारत नहीं, सारी दुनिया काली देह में पड़ी है, विषय सागर में गोता खाती रहती है। तुम उससे निकाल स्वर्ग का द्वार दिखाती हो; इसलिए माताओं पर कलश रखा है। तो तुमको पहले इनका ख्याल रखना चाहिए। एक तरफ तो माताएँ अमृत पिलाए रही हैं। नर्क के द्वारे जाने से बचाती हैं। बाप कहते हैं, ये नर्क का फाटक अब सील कर दो। फिर सील खोलने लिए भी मारते हैं। अब बाप कहते हैं, मैं माताओं को उठाता हूँ। सन्यासी तो भाग जाते हैं। बाप फिर कैसी कमाल करते हैं। कहते हैं, इन माताओं द्वारा अमृत पीने स्वयं कल्याण नहीं हो सकता। दिखाया भी हुआ है, भीष्म आदि को माताओं ने बाण मारे हैं। ये सभी हैं संगम की बातें, जबकि सृष्टि बदलनी है। वैश्यालय से शिवालय बनना है। स्वर्ग की स्थापना करने वाला एक शिवबाबा। कोई मनुष्य, ब्र०वि०शं० को भी क्रियेटर नहीं कहेंगे। कहते हैं, मनुष्य को किसने पैदा किया? भगवान ने। वो तो एक ही है। तो बाप कहते हैं, मीठी–2 बच्चियाँ नर्क के द्वार तरफ कब देखना भी नहीं। कोई बच्चों को मंसा संकल्प भी आते हैं नर्क के द्वार का। इसको काम का नशा कहा जाता है। इसलिए कहते हैं, द्रौपदी ने कहा– मुझे दुर्योधन नगन करते हैं। मुझे नगन होने से बचाओ। बाप भी कहते हैं– अब नगन मत हो। तो स्त्री को नर्क का द्वार बंद करना पड़े। कोई भी हालत में नर्क का द्वार बंद करो। द्रौपदी ने कहा– दुर्योधन मेरा द्वार खोलता है, बचाओ। इस समय दुर्योधन तो सभी हैं, जो नगन करते हैं। बात भी सारी अभी की है। भागवत भी अभी का है। महाभारत लड़ाई सामने खड़ी है। कुंभीपाक नर्क भी कलियुग को कहा जाता है, जहाँ विख बहुत याद आती है। सभी कहते हैं– स्वर्ग में विख मिलेगी? तुम कहती हो– वहाँ विख की बात नहीं। ये 5 विकार तो महा काली देह में रहते हैं। इनमें पहले आता है अशुद्ध अहंकार। ये सभी संगमयुग की ही बातें हैं। अभी सभी विषय, ज़हर में गोते खाए रहे हैं। सन्यासी भी विख से पैदा होते हैं। तो ज़रूर पतित ठहरे। वो समझते हैं, हमारा शरीर अपवित्र है। आत्मा ... तो निर्लेप है। इसलिए गंगा में साफ करते हैं। अब गंगा से थोड़े ही शुद्ध होगा। ये तो प्रकृति ही तमोप्रधान है। फिर भी विख से जन्म लेना पड़ेगा। इस काली देह में तो सब बिच्छू–टिंडन पड़े हैं। रौरव नर्क भी यही है। बाकी कोई नदी ही है। सभी मनुष्य बहुत तड़पते हैं। इसलिए वो हठयोग सन्यास करते हैं। बाबा सिखाते हैं, राजयोग सन्यास। कृष्ण को भी अभी आकर काली देह से निकाल, राजयोग सिखाए रहे हैं। कल एक माता आई, कहा– हम अनाथ आश्रम को संभालने वाली हैं। अब उसको आश्रम तो नहीं कह सकते। आश्रम माना पवित्र। इसको अनाथालय कहेंगे और ये है सनाथालय। सतयुग में भारत सनाथ था, अब अनाथ है। इसलिए हम इससे किनारा करते हैं। स्त्री को नर्क का द्वार कहते हैं। उसमें जाते हैं पुरुष; इसलिए सन्यासी जंगल में जाते हैं। नर्क के द्वार में नहीं जाते तो न जाने वालों के आगे, जाने वाले माथा टेकते हैं। अब बाबा कहते हैं, क्यों नहीं दोनों पवित्र बन जाएँ। रहना तो दोनों को यहाँ ही है। तुम स्त्रियाँ थोड़े ही भागेंगी। दोनों यहाँ पवित्र रहो तो स्वर्ग बन जाएगा। फिर भी कोई–2 लिखते हैं– बाबा, हम नर्क में गिर गए। अरे, ये तो जैसे तुम कुंभीपाक नर्क में वा काली देह में गिर पड़ते हो। बाप बच्चों को कितना समझाते हैं। सारी दुनिया के मनुष्य काली देह में बहुत दुखी हैं। बाप इससे निकाल अमृत के सागर में ले जाते हैं। कहते हैं ना, मानसरोवर पर अमृत का सागर है। मनुष्य को सरोवर कहा जाता है। ज्ञान का उसमें मंथन चलता है।

इन्होंने शिव–पार्वती को ऊँचे पहाड़ पर जाकर बिठाया है। बहुत ऊँचे–2 मंदिर बनाय हैं। वास्तव में शिव का मंदिर ऊँचा होना चाहिए; परंतु वहाँ कौन जाएगा, इसलिए आजकल शहरों में ही बनाए दिए हैं। ये सभी राज़ तुम बच्चों के बुद्धि में ही है; परन्तु कोई–2 को धारणा नहीं होती; क्योंकि अभी नर्क का द्वार याद आता है। कोई तो कन्याओं को घुटका दे नर्क द्वार में डाल देती है। कन्या को शादी कराई, थाटक(फाटक) खुला, दुर्गति हुई, फिर सभी को माथा टेकती रहती है। तुम पवित्र कन्याएँ हो तो जाकर पूजनीय देवी–देवता बनती हो। अगर द्वार खुला तो पूज्य कैसे बनेगी, रसातल चली जाएँगी। बाप समझाते तो बहुत है। दिल होती है, देहली वा बॉम्बे में जाए डांस करूँ। वहाँ तो बहुत ढेर के ढेर आफतें हैं। यहाँ तो मधुबन है, विकार की बात नहीं। कर्म इन्द्रियों से नर्क के द्वार में गया और बेड़ी डूबी। सिंध में पहाका है, थाटक(फाटक) में न घुसना। कितनी कड़ी बातें हैं! बाबा तो सभा में ठोक सकता है; इसलिए बॉम्बे–देहली याद पड़ती है। वहाँ अच्छी तरह ठोकूँ कि अब काली देह में मत कूदो। उसको कुंभीपाक नर्क कहा जाता है। विद्वान–पंडितों किसको पता नहीं कि भारत कितना गिरा हुआ है। वो तो गुलछरी उड़ाते हैं। बड़े–2 महल बनाए बैठे हैं। इन्हों को पकड़ने लिए बाप डायरैक्शन तो देते हैं; परन्तु बच्चे समझते नहीं। ज्ञान की ताकत नहीं तो उछलते नहीं। इस बात को बड़े जोर से उठाना चाहिए। श्री–श्री 108 जगतगुरु का टाइटल हिरण्यकश्यपों ने अपने सिर पर रख दिया है। विख से पैदा हुए, काली देह में पड़े हुए अपने ऊपर इतने टाइटल रख बैठे हैं। कितना ज़ोर से उठाना चाहिए; परन्तु बच्चे अजुन सगीर हैं। अब तो माताओं को ये चैलेंज देनी है। इसमें निर्भयता बहुत चाहिए। पुरुष तो निर्भय बन लड़ाई में घुस जाते हैं, माताएँ नहीं जातीं। इन्हों का चोला ऐसा है। निर्भय होने में अजुन समय है जब तक बालिग बने। अच्छा, कितना समझाएँ– बच्चे, कीड़ों को निकाल भूँ–2 करो। जो भूँ–2 न करे उनको भ्रमरी कैसे कहेंगे! अच्छा, बापदादा, माँ का सिकीलधे बच्चों को गुडमॉर्निंग।

बाप कल्याणकारी आते हैं तो उनके जो बच्चे बनते हैं उन्हों के लिए कल्याण ही कल्याण है। तुम बच्चे ही सारी दुनिया में जीत तरफ हो; और जीत में है सुख, हार में है दुख। माया पर जीत पाना तेरी तकदीर में है। बाकी दुनिया में क्या है! हमारे सामने तो साधु–सन्यासी सभी बुद्धू, पत्थरबुद्धि हैं। हम हैं इनकागनिटो। हम सभी को जान सकते हैं, हमको कोई मुश्किल जान सकते; क्योंकि यह गुप्त सेना है माया पर जीत पाने वाली। माया जीते जगतजीत गाया जाता है ना! तुम्हारी है पऊ बारह, बाकी दुनिया की है तीन दाणी। ॐ

सच्ची संसार की बात तो हम ही जानते हैं। अपन जानते हैं तब खुशी में भी रहते हैं, कल्याण के तरफ पुरुषार्थ करना ही है। और का कल्याण सो अपना कल्याण। औरों का कल्याण जब करेंगे तब हमारा कल्याण होगा। दूसरों का कल्याण करें तब कहें हम कल्याणकारी बाप के बच्चे कल्याणकारी हैं। उसमें भी सहज ते सहज है ये शिव का चित्र हाथ में उठाय समझाना। ल०ना० का चित्र भी बन रहा है। स्वर्ग में है ल०ना० का राज्य। स्वर्ग की स्थापना करने वाला है परमपिता प०। यही बातें समझानी हैं। अच्छा, ॐ मम् प्राणों, पूना में अब दूसरा सेन्टर भी लिया गया है, जहाँ जनक और सरला बहन रहती हैं। एड्रेस भेज रहे हैं। **Brahma kumaris**

2 phayra Road, Poona-1